

सूरह दहर - 76

سُورَةُ الدَّهْرِ

सूरह दहर के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 31 आयतें हैं।

- इस सूरह में यह शब्द आने के कारण इस का नाम (सूरह दहर) है। इस का दूसरा नाम (सूरह इन्सान) भी है। दहर का अर्थ: ((युग)) है।
- इस में मनुष्य की उत्पत्ति का उद्देश्य बताया गया है। और काफ़िरों के लिये कड़ी यातना का एलान किया गया है।
- आयत 5 से 22 तक सदाचारियों के भारी प्रतिफल का वर्णन है। और 23 से 26 तक नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को धैर्य, नमाज़ तथा तस्बीह का निर्देश दिया गया है। इस के पश्चात् उन को चेतावनी दी गई है जो परलोक से अचेत हो कर मायामोह में लिप्त हैं।
- अन्त में कुर्आन की शिक्षा मान लेने की प्रेरणा दी गई है। ताकि लोग अल्लाह की दया में प्रवेश करें। और विरोधियों को दुःखदायी यातना की चेतावनी दी गई है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. क्या व्यतीत हुआ है मनुष्य पर
युग का एक समय जब वह कोई
विचर्चित^[1] वस्तु न था?
2. हम ने ही पैदा किया मनुष्य को
मिश्रित (मिले हुये) वीर्य^[2] से, ताकि
उस की परीक्षा लें। और बनाया उसे
सुनने तथा देखने वाला।

هَلْ أَتَى عَلَى الْإِنْسَانِ حِينٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُنْ
شَيْئًا مَّذْكُورًا

إِنَّا خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ أَمْشَاجٍ نَّبْتَلِيهِ
فَجَعَلْنَاهُ سَمِيعًا بَصِيرًا

1 अर्थात् उस का कोई अस्तित्व न था।

2 अर्थात् नर-नारी के मिश्रित वीर्य से।

3. हम ने उसे राह दर्शा दी^[1] (अब) वह चाहे तो कृतज्ञ बने अथवा कृतघ्न।
4. निःसंदेह हम ने तय्यार की है काफ़िरो (कृतघ्नों) के लिये जंजीर तथा तौक और दहकती अग्नि।
5. निश्चय सदाचारी (कृतज्ञ) पियेंगे ऐसे प्याले से जिस में कपूर मिश्रित होगा।
6. यह एक स्रोत होगा जिस से अल्लाह के भक्त पियेंगे। उसे बहा ले जायेंगे (जहाँ चाहेंगे)^[2]।
7. जो (संसार में) पूरी करते रहे मनौतियाँ^[3] और डरते रहे उस दिन से^[4] जिस की आपदा चारों ओर फैली हुयी होगी।
8. और भोजन कराते रहे उस (भोजन) को प्रेम करने के बावजूद, निर्धन तथा अनाथ और बंदी को।
9. (अपने मन में यह सोच कर) हम तुम्हें भोजन कराते हैं केवल अल्लाह की प्रसन्नता के लिये। तुम से नहीं चाहते हैं कोई बदला और न कोई कृतज्ञता।
10. हम डरते हैं अपने पालनहार से, उस

- إِنَّا هَدَيْنَاهُ السَّبِيلَ إِمَّا شَاكِرًا وَإِمَّا كَفُورًا ﴿١﴾
- إِنَّا أَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ سَلَاسِلًا وَأَغْلَاقًا وَسَعِيرًا ﴿٢﴾
- إِنَّ الْآبِرَارَ يَشْرَبُونَ مِنْ كَأْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُورًا ﴿٣﴾
- عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللَّهِ يُفَجِّرُونَهَا تَفْجِيرًا ﴿٤﴾
- يُفُوتُونَ بِالنَّذْرِ وَيَخَافُونَ يَوْمًا كَانَ شَرُّهُ مُسْتَطِيرًا ﴿٥﴾
- وَيُطْعَمُونَ فِيهَا عَلَاقِ حَبٍ وَسِكِّينًا زَيْتًا ﴿٦﴾
- وَأَسِيرًا ﴿٧﴾
- إِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللَّهِ لَا نُثْرِيْكُمْ مِنْكُمْ جَزَاءً وَلَا شُكُورًا ﴿٨﴾
- إِنَّا نَخَافُ مِنْ رَبِّنَا يَوْمًا عَبُوسًا قَطَطًا ﴿٩﴾

1 अर्थात् नबियों तथा आकाशीय पुस्तकों द्वारा, और दोनों का परिणाम बता दिया गया।

2 अर्थात् उस को जिधर चाहेंगे मोड़ ले जायेंगे। जैसे: घर, बैठक आदि।

3 नज़र (मनौती) का अर्थ है: अल्लाह के समिप्य के लिये कोई कर्म अपने ऊपर अनिवार्य कर लेना। और किसी देवी-देवता तथा पीर फकीर के लिये मनौती मानना शिर्क है। जिस को अल्लाह कभी भी क्षमा नहीं करेगा। अर्थात् अल्लाह के लिये जो भी मनौतियाँ मानते रहे उसे पूरी करते रहे।

4 अर्थात् प्रलय और हिसाब के दिन से।

दिन से जो अति भीषण तथा घोर होगा।

11. तो बचा लिया अब्बाह ने उन्हें उस दिन की आपदा से और प्रदान कर दिया प्रफुल्लता तथा प्रसन्नता।
12. और उन्हें प्रतिफल दिया उन के धैर्य के बदले स्वर्ग तथा रेशमी वस्त्र।
13. वह तकिये लगाये उस में तख्तों पर बैठे होंगे। न उस में धूप देखेंगे न कड़ा शीत।
14. और झुके होंगे उन पर उस (स्वर्ग) के साये। और बस में किये होंगे उस के फलों के गुच्छे पूर्णतः।
15. तथा फिराये जायेंगे उन पर चाँदी के बर्तन तथा प्याले जो शीशों के होंगे।
16. चाँदी के शीशों के जो एक अनुमान से भरेंगे।^[1]
17. और पिलाये जायेंगे उस में ऐसे भरे प्याले जिस में सोंठ मिली होगी।
18. यह एक स्रोत है उस (स्वर्ग) में जिस का नाम सलसबील है।
19. और (सेवा के लिये) फिर रहे होंगे उन पर सदावासी बालक, जब तुम उन्हें देखोगे तो उन्हें समझोगे कि बिखरे हुये मोती हैं।
20. तथा जब तुम वहाँ देखोगे तो देखोगे बड़ा सुख तथा भारी राज्य।

قَوْفَهُمْ اللهُ شَرَّذَلِكَ الْيَوْمَ وَلَقَهُمْ نَصْرَةٌ
وَسُرُورًا ۝

وَجَزَاهُمْ بِمَا صَبَرُوا جَنَّةً وَخَيْرًا ۝

مُتَّكِئِينَ فِيهَا عَلَى الْأَرَائِكِ لَا يَرَوْنَ فِيهَا
شَمْسًا وَلَا زَمْهَرِيرًا ۝

وَدَانِيَةً عَلَيْهِمْ ظِلُّهَا وَذُلَّتْ قُطُوفُهَا تَذَلُّلًا ۝

وَيُطَافُ عَلَيْهِمْ بِآنِيَةٍ مِنْ فِضَّةٍ وَأَلْوَابٍ كَانَتْ
قَوَارِيرًا ۝

قَوَارِيرَ أَمِْنْ فِضَّةٍ قَدَّرُوهَا تَقْدِيرًا ۝

وَيُسْقَوْنَ فِيهَا كَأْسًا كَانَ مِزَاجُهَا زَنْجَبِيلًا ۝

عَيْنًا فِيهَا تُسَمَّى سَلْسَبِيلًا ۝

وَيُطَوَّنُ عَلَيْهِمْ وَلَدَانٌ يَحْكُمُونَ إِذَا رَأَوْهُمُ
حَسِبَتْهُمْ لُؤْلُؤًا مَنُورًا ۝

وَإِذَا رَأَيْتَ ثَمَرًا رَأَيْتَ نَعِيمًا وَمُلْكًا كَبِيرًا ۝

1 अर्थात् सेवक उसे ऐसे अनुमान से भरेंगे कि न आवश्यकता से कम होंगे और न अधिक।

21. उन के ऊपर रेशमी हरे महीन तथा दबीज़ वस्त्र होंगे। और पहनाये जायेंगे उन्हें चाँदी के कंगन, और पिलायेगा उन्हें उन का पालनहार पवित्र पेय।

عَلَيْهِمْ ثِيَابٌ سُنْدُسٌ خُضْرٌ وَاسْتَبْرَقٌ
وَحُلٌّ أَسَاوِرٌ مِنْ ذَهَبٍ وَسِقْهُمْ رُبُّهُمْ شَرَابًا
طَهُورًا ۝

22. (तथा कहा जायेगा): यही है तुम्हारे लिये प्रतिफल और तुम्हारे प्रयास का आदर किया गया।

إِنَّ هَذَا كَانَ لَكُمْ جَزَاءً وَكَانَ سَعْيُكُمْ مَشْكُورًا ۝

23. वास्तव में हम ने ही उतारा है आप पर कुर्आन थोड़ा - थोड़ा कर^[1] को।

إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْآنَ تَنْزِيلًا ۝

24. अतः आप धैर्य से काम लें अपने पालनहार के आदेशानुसार और बात न मानें उन में से किसी पापी तथा कृतघ्न की।

فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا نَظْمُ مِنْهُمْ إِنَّمَا أَوْكُفُّورًا ۝

25. तथा स्मरण करें अपने पालनहार के नाम का प्रातः तथा संध्या (के समय)।

وَاذْكُرْ اسْمَ رَبِّكَ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ۝

26. तथा रात्री में सज्दा करें उस के समक्ष और उस की पवित्रता का वर्णन करें रात्री के लम्बे समय तक।

وَمِنَ اللَّيْلِ فَاسْجُدْ لَهُ وَسَبِّحْهُ لَيْلًا طَوِيلًا ۝

27. वास्तव में यह लोग मोह रखते हैं संसार से, और छोड़ रहे हैं अपने पीछे एक भारी दिन^[2] को।

إِنَّ هَؤُلَاءِ يُحِبُّونَ الْعَاجِلَةَ وَيَذَرُونَ
وَرَاءَهُمْ يَوْمًا ثَقِيلًا ۝

28. हम ने ही उन्हें पैदा किया है और सुदृढ़ किये हैं उन के जोड़-बंदा तथा जब हम चाहें बदला दें उन^[3] के जैसे (दूसरों को)।

نَحْنُ خَلَقْنَاهُمْ وَشَدَدْنَا أَسْرَهُمْ وَإِذَا شِئْنَا
بَدَلْنَا أَمْثَالَهُمْ بِبَدِيلٍ ۝

1 अर्थात् नबूवत की तेईस वर्ष की अवधि में, और ऐसा क्यों किया गया इस के लिये देखिये: सूरह बनी इस्राईल, आयत: 106।

2 इस से अभिप्राय प्रलय का दिन है।

3 अर्थात् इन का विनाश कर के इन के स्थान पर दूसरों को पैदा कर दे।

29. निश्चय यह (सूरह) एक शिक्षा है।
अतः जो चाहे अपने पालनहार की
ओर (जाने की) राह बना ले।

إِنَّ هَذِهِ تَذْكِرَةٌ ۖ فَمَنْ شَاءَ اتَّخَذَ إِلَىٰ رَبِّهِ
سَبِيلًا ۝

30. और तुम अल्लाह की इच्छा के बिना
कुछ भी नहीं चाह सकते।^[1] वास्तव
में अल्लाह सब चीजों और गुणों को
जानने वाला है।

وَمَا تَشَاءُونَ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ
عَلِيمًا حَكِيمًا ۝

31. वह प्रवेश देता है जिसे चाहे अपनी
दया में। और अत्याचारियों के लिये
उस ने तय्यार की है दुःखदायी
यातना।

يُدْخِلُ مَنْ يَشَاءُ فِي رَحْمَتِهِ ۖ وَالظَّالِمِينَ
أَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۝

1 अर्थात् कोई इस बात पर समर्थ नहीं कि जो चाहे कर ले। जो भलाई चाहता हो तो अल्लाह उसे भलाई की राह दिखा देता है।